सं पोर्डिं।एफ.ों / 139-83/54931. - चूंकि इरियाणा के राज्यपान की राय है कि मैं. शास्त्रर स्टोन वैयर पाईप प्रातित, यमर नगर, मधुरा रोह, फरीबाबाद श्री पन्ना नान तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद विकित मामने में जोई बौजोकिक विवाद ें ;

मोर चुंकि हुरियाणा के राज्यपाल दिवाद को न्यायनिर्धय हेत् निर्धिष्ट अरना बाइनीय समझने हैं :

्रसीनए, यद, घोडोगिक विदाद प्रधिनियम, 1947 को धारा 10 की उपधारा (1) के दान्य (ग) द्वारा प्रदान की गर्ड प्रिल्कों का प्रयोग करते हुने, हरियाणा के राज्यपान इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415- उन्वम--68/:5254, दिनाक 20-6-1968 के साथ पढ़ते हुने प्रधिसूचना सं. 11495-अम-/57/11245 दिनोक 7-3-58 द्वारा उदत ग्रिधिनियम की वारा 7 के प्रधीन एठित जम न्यायालय करीदावाद को दिवाद ग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिया मामला न्यायनिर्णय के विधे निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उन्त प्रवन्धकों तथा अभिकों के वीच या तो दिवादश्रस्त मामला है या विदाद से सुसंबत प्रथना सर्वधित मामला है:---

त्या भी पन्ना जाल की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहुत कर हकदार है ?

स भी ि।एफ तेन्। १/220-33/54938. —्र्रेकि राज्यपाल इरियाणा की राय है कि मैसजे राभ मन्स टूल्ज इंग्लिया (र्राजः) 2 कें|43 जी , एन आई.टी. फरीदाबाद के श्रमिक श्री बाचू जाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिजित मामजे के सम्बन्ध में तेई बोदोगिक दिवाद है :

भौर पाकि हरियाका है राज्यपाल विवाद हो न्यायनिर्णय हैत निर्धिष्ट हरना प्राफ्रनीय समझते है ;

्सिनिए, प्रयं, भौद्धोरिक वियाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के घण्ट (ग) द्वारा प्रदान ी गई । पोलायों जा प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उत्त अधिनियम की धारा 2क के अधीन मौजीतिक अधिकरण, हरियाणा फरीदाबाद की नीचे निर्दिष्ट विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामने श्रीमक क्या प्रकादकों व मध्य न्यायानक्षित के विधि निर्दिष्ट करते हैं:—

त्या औं जाद तात की सेवाओं का समापन व्यायोजित तथा ठीक हैं ? यदि नहीं, वो यह किस राहर का इत्यार हैं ?

सं मो जिं|फरीबाबाद/124-82/54945.—चूँकि राज्यपाल, हुरियामा ी राय है कि मैसर्च फरीबाबाद फोरजिंग प्रास्ति. न्ताट त. 5 के सैंन्टर, च फरीबाबाद है श्रमिक श्री गोतम - धर्मा तथा उसके प्रयुखको ें मध्य इसमें इसके बाद विधित मामलें के सम्यन्य में कोई भौजोकिक विवाद है :

प्रौर पुक्ति हरियाणा के राज्यपाल दिवाद को न्यायनिर्णय हेन् निर्विष्ट करना पांछनीय समझते है ;

इस विशे, बच, श्रोडोंकिक विवाद ग्राधिनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के देश: (ग) शरा प्रदान भी गई प्रतितयों ज प्रयोग करते हुए इरियाधा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा अवन प्रधिनयम की भारा 7% के श्रीन भीजी- विवाद प्रधि राज, जिस्साधा फरीडाबाद की नीचे निर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुनंगत या उससे सम्बन्धित मामने अमिक तथा प्रधन्त्रकों के सध्य न्यायानकीय के लिये विविदेश्य करते हैं : ल

ह्या औं भौतम अर्मा की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक है है अबि नहीं, तो बहु किस रक्षत जा कवार है है

स जो दि /एक ी.. 136-83/51952.—्हींव हरियाणा के राज्यपाल ही राथ है कि मैं प्रिक ही त्या है।.. 13/6, मजुरा रोह, करीबाबाद श्री राजेन्द्र प्रसाद तथा उसके प्रदेशकों के मध्य इसमें इसके बाद लिकिन मामले में कोटे प्रौधीरिक विवाद है ;

भौर पुलि इंटियापा है राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निविष्ट ारना हांछतीय समझतं है है

स्थित वन, बौजींकर विवाद प्रधिनियम, 1947 ती प्रशा 10 ती जपधार (1) है धण्ड (ग) द्वारा प्रधान भी गर्र रित्वर्या जा प्रथोग करते ्ये, हॉरवश्या के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसन्ता सं 5415-3-अम-68/15254, विनीद 20-6--1968 है साम पहले हुमें प्रधिस्नाना सं 11495-जी न्य्रम/57/11245, विनाद 7-2-58 द्वारा उत्त प्रधिनियम ही धारा 7 कि विशेष परिता वम लायालय करीदाबाद ही विवाद प्रस्त या उससे संबंधित नीचे विद्या मामना त्यायनिर्णय के विवाद करते हैं, जो कि उनत प्रवस्ता विभाव प्रसिद्ध विवाद संस्ता मामना है या विवाद संस्ता मामना है या विवाद संस्ता मामना है या विवाद संस्तान अन्यवा संबंधित मामना है:

जना जी ताज़िक प्रसाद जी सेजाओं जा समापन त्यायोजित तथा ठीक है ! योद नहीं, तो नह किस साहत जा हुकवार है ?